



Ms palvi

16 Jun 2001

09:00 PM

Bihar Sharif

Model: Web-L1

Order No: 119632201

बिमारी का बगैर दवाई भी इलाज है, मगर मौत का कोई इलाज नहीं।  
ज्योतिष दुनियाबी हिसाब-किताब है, कोई दावाए खुदाई नहीं।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 16/06/2001  
दिन \_\_\_\_\_: शनिवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 21:00:21 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 40:04:59 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Bihar Sharif  
राज्य \_\_\_\_\_: Bihar  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 25:07:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 85:25:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:11:40 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 21:12:01 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:00:39 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 14:51:53 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 04:58:21 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:39:41 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 13:41:20 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: ग्रीष्म  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 01:39:58 मिथुन  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 07:04:58 मकर

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मकर - शनि  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मेष - मंगल  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: अश्विनी - 1  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: केतु  
योग \_\_\_\_\_: शोभन  
करण \_\_\_\_\_: विष्टि  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: अश्व  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: चतुष्पाद  
वर्ग \_\_\_\_\_: सिंह  
युँजा \_\_\_\_\_: पूर्व  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: चू-चुन्नी  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - स्वर्ण  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मिथुन

पुण्य चक्र ज्योतिष केंद्र

Karnal  
9852

harish.rattan15@gmail.com

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

| कैलेंडर    | वर्ष          | मास     | तिथि/प्रविष्टे |
|------------|---------------|---------|----------------|
| राष्ट्रीय  | शक : 1923     | ज्येष्ठ | 26             |
| पंजाबी     | संवत : 2058   | आषाढ़   | 3              |
| बंगाली     | सन् : 1408    | आषाढ़   | 1              |
| तमिल       | संवत : 2058   | आनी     | 2              |
| केरल       | कोल्लम : 1176 | मिथुनम  | 2              |
| नेपाली     | संवत : 2058   | आषाढ़   | 2              |
| चैत्रादि   | संवत : 2058   | आषाढ़   | कृष्ण 10       |
| कार्तिकादि | संवत : 2058   | ज्येष्ठ | कृष्ण 10       |

### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 10  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 24:01:43  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 10  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रेवती  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 20:39:51 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : अश्विनी  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : सौभाग्य  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 05:57:13 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : शोभन  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : वणिज  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:44:53 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
भयात \_\_\_\_\_ : 00:51:15  
भभोग \_\_\_\_\_ : 61:59:23  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : केतु 6 वर्ष 10 मा 26 दि

### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : कार्तिक  
तिथि \_\_\_\_\_ : 1-6-11  
दिन \_\_\_\_\_ : रविवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : मघा  
योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
करण \_\_\_\_\_ : बव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मृग  
लग्न \_\_\_\_\_ : मेष  
सूर्य \_\_\_\_\_ : कर्क  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मेष  
मंगल \_\_\_\_\_ : सिंह  
बुध \_\_\_\_\_ : वृष  
गुरु \_\_\_\_\_ : कन्या  
शुक्र \_\_\_\_\_ : तुला  
शनि \_\_\_\_\_ : मिथुन  
राहु \_\_\_\_\_ : वृश्चिक

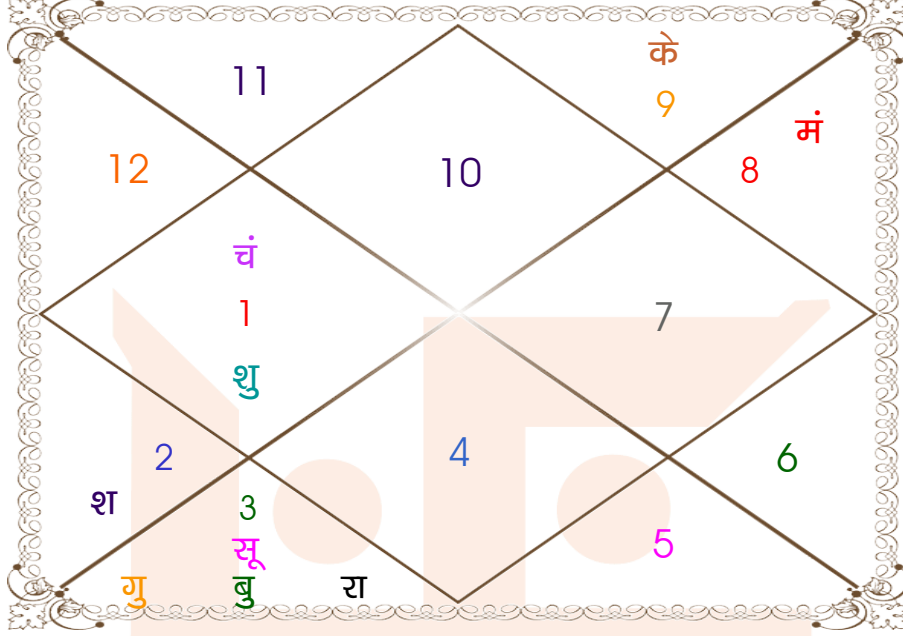
### पुण्य चक्र ज्योतिष केंद्र

Karnal  
9852

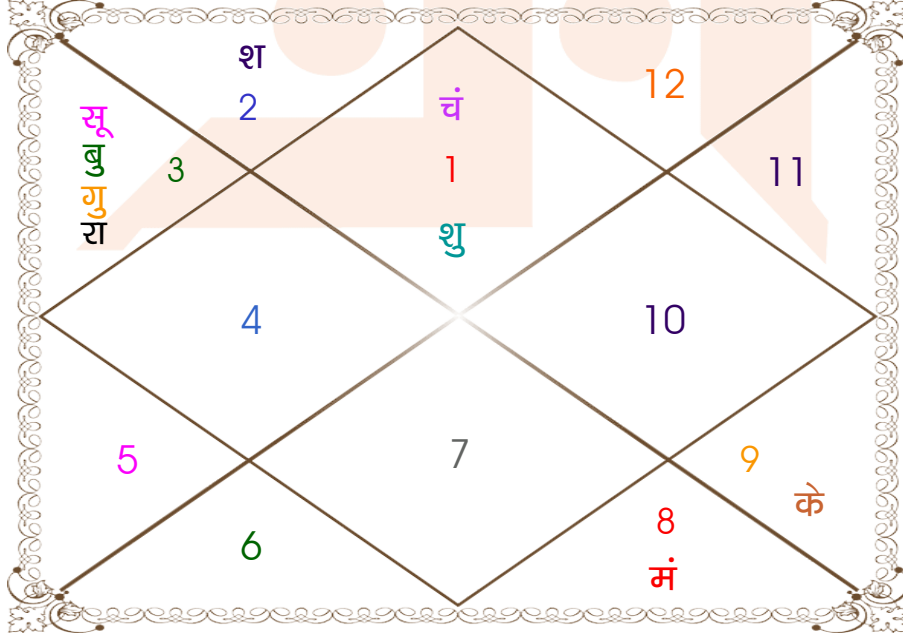
harish.rattan15@gmail.com

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## पुण्य चक्र ज्योतिष केंद्र

Karnal  
9852

harish.rattan15@gmail.com

## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

|    |          |   |                      |
|----|----------|---|----------------------|
|    | शु<br>चं | श | गु<br>सू<br>बु<br>रा |
|    |          |   |                      |
| ल  |          |   |                      |
| के | मं       |   |                      |

### लग्न कुंडली

|                |          |    |
|----------------|----------|----|
| श              | शु<br>चं |    |
| रा<br>गु<br>बु | सू       |    |
|                |          | ल  |
|                |          | के |
|                |          | मं |

विंशोत्तरी  
केतु 6वर्ष 10मा 26दि  
केतु

16/06/2001

14/05/2121

|        |            |
|--------|------------|
| केतु   | 12/05/2008 |
| शुक्र  | 12/05/2028 |
| सूर्य  | 13/05/2034 |
| चन्द्र | 12/05/2044 |
| मंगल   | 13/05/2051 |
| राहु   | 13/05/2069 |
| गुरु   | 13/05/2085 |
| शनि    | 13/05/2104 |
| बुध    | 14/05/2121 |

योगिनी  
भ्रामरी 3वर्ष 11मा 10दि  
संकटा

28/05/2023

28/05/2031

|         |            |
|---------|------------|
| संकटा   | 07/03/2025 |
| मंगला   | 28/05/2025 |
| पिंगला  | 06/11/2025 |
| धान्या  | 07/07/2026 |
| भ्रामरी | 28/05/2027 |
| भद्रिका | 07/07/2028 |
| उल्का   | 06/11/2029 |
| सिद्धा  | 28/05/2031 |

पुण्य चक्र ज्योतिष केंद्र

Karnal

9852

harish.rattan15@gmail.com

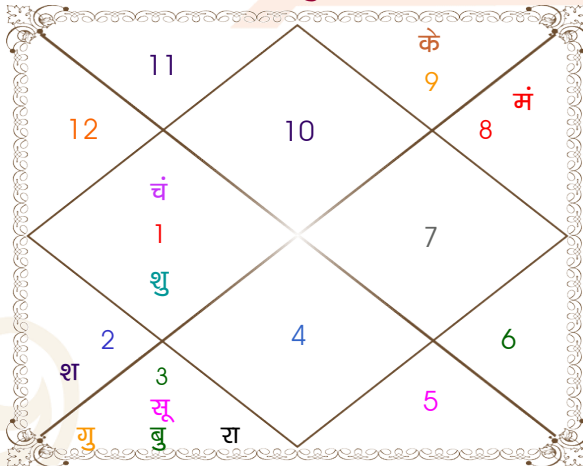
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह   | राशि      | अंश      | स्थिति     | अंधा | सोया | धर्मी | नेक/मन्दा |
|--------|-----------|----------|------------|------|------|-------|-----------|
| लग्न   | मकर       | 07:04:58 | ---        | --   | --   | --    | नेक       |
| सूर्य  | मिथुन     | 01:39:58 | सम राशि    | --   | हाँ  | --    | मन्दा     |
| चन्द्र | मेष       | 00:10:52 | सम राशि    | --   | हाँ  | --    | नेक       |
| मंगल   | व वृश्चिक | 27:56:44 | स्वराशि    | --   | --   | --    | नेक       |
| बुध    | व मिथुन   | 01:32:05 | स्वराशि    | --   | हाँ  | --    | मन्दा     |
| गुरु   | मिथुन     | 00:07:49 | शत्रु राशि | --   | हाँ  | --    | मन्दा     |
| शुक्र  | मेष       | 16:07:33 | सम राशि    | --   | हाँ  | --    | मन्दा     |
| शनि    | वृष       | 13:19:21 | मित्र राशि | --   | हाँ  | --    | मन्दा     |
| राहु   | व मिथुन   | 12:32:11 | उच्च राशि  | --   | हाँ  | --    | मन्दा     |
| केतु   | व धनु     | 12:32:11 | उच्च राशि  | --   | --   | --    | नेक       |

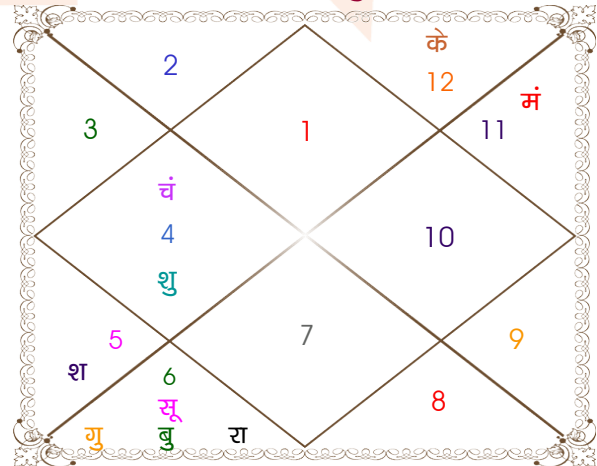
### भाव स्थिति

| खाना नं. | मालिक | पक्का घर  | किस्मत जगानेवाला | सोया | उच्च       | नीच        |
|----------|-------|-----------|------------------|------|------------|------------|
| 1        | मंगल  | सूर्य     | मंगल             | हाँ  | सूर्य      | शनि        |
| 2        | शुक्र | गुरु      | चंद्र            | हाँ  | चंद्र      | --         |
| 3        | बुध   | मंगल      | बुध              | हाँ  | राहु       | केतु       |
| 4        | चंद्र | चंद्र     | चंद्र            | --   | गुरु       | मंगल       |
| 5        | सूर्य | गुरु      | सूर्य            | --   | --         | --         |
| 6        | बुध   | बुध,केतु  | केतु             | --   | बुध,राहु   | शुक्र,केतु |
| 7        | शुक्र | शुक्र,बुध | शुक्र            | हाँ  | शनि        | सूर्य      |
| 8        | मंगल  | मंगल,शनि  | चंद्र            | हाँ  | --         | चंद्र      |
| 9        | गुरु  | गुरु      | शनि              | --   | केतु       | राहु       |
| 10       | शनि   | शनि       | शनि              | --   | मंगल       | गुरु       |
| 11       | शनि   | शनि       | गुरु             | --   | --         | --         |
| 12       | गुरु  | गुरु,राहु | राहु             | --   | शुक्र,केतु | बुध,राहु   |

### लग्न कुंडली



### लालकिताब कुंडली



### पुण्य चक्र ज्योतिष केंद्र

Karnal

9852

harish.rattan15@gmail.com

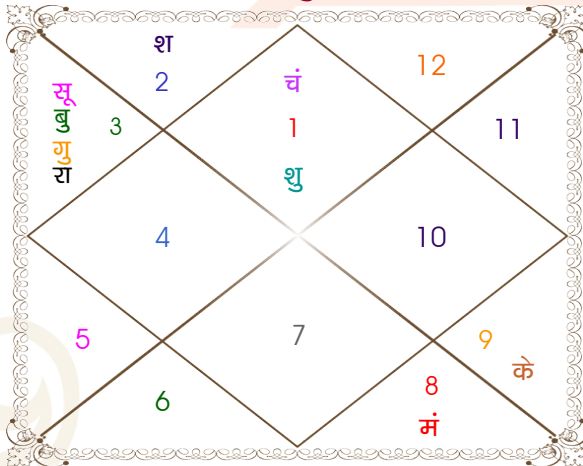
## मैत्रीचक्र सारिणी

| ग्रह  | सूर्य | चंद्र | मंगल  | बुध   | गुरु  | शुक्र | शनि   | राहु  | केतु  |
|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| सूर्य | ---   | मित्र | मित्र | शत्रु | मित्र | सम    | सम    | सम    | शत्रु |
| चंद्र | मित्र | ---   | शत्रु | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | सम    |
| मंगल  | मित्र | मित्र | ---   | सम    | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | सम    |
| बुध   | मित्र | सम    | शत्रु | ---   | शत्रु | मित्र | शत्रु | मित्र | शत्रु |
| गुरु  | मित्र | मित्र | मित्र | सम    | ---   | सम    | शत्रु | शत्रु | शत्रु |
| शुक्र | सम    | सम    | शत्रु | मित्र | शत्रु | ---   | मित्र | सम    | मित्र |
| शनि   | सम    | सम    | सम    | मित्र | शत्रु | मित्र | ---   | मित्र | शत्रु |
| राहु  | सम    | शत्रु | सम    | मित्र | शत्रु | सम    | मित्र | ---   | मित्र |
| केतु  | शत्रु | सम    | सम    | शत्रु | शत्रु | मित्र | शत्रु | मित्र | ---   |

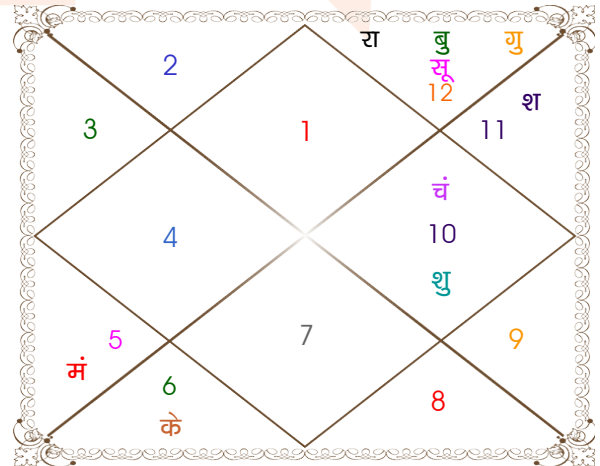
## ग्रह/राशि फल

| ग्रह  | वर्णन                              | फल   |
|-------|------------------------------------|------|
| सूर्य | आग से जला, धन से बेफिक्र।          | राशि |
| चंद्र | खर्च पर और बढ़ने वाली आय का दरिया। | ग्रह |
| मंगल  | दूध से पला हुआ पालतू शेर।          | --   |
| बुध   | गुमनाम योगी और दिल का राजा।        | ग्रह |
| गुरु  | मुफ्तखोर मगर साधु स्वभाव।          | राशि |
| शुक्र | खुशकी का सफर।                      | राशि |
| शनि   | कच्चे खाने वाला सांप।              | --   |
| राहु  | फांसी काटने वाला सहायक हाथी।       | --   |
| केतु  | ऐशो आराम जदी विरासत।               | --   |

## चन्द्र कुंडली



## लालकिताब चन्द्र



## पुण्य चक्र ज्योतिष केंद्र

Karnal

9852

harish.rattan15@gmail.com

## लालकिताब दशा

|                                                         |                                                        |                                                         |                                                         |                                                         |
|---------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------|
| <b>शनि 6 वर्ष</b><br>16/06/2001<br>17/06/2007           | <b>राहु 6 वर्ष</b><br>17/06/2007<br>16/06/2013         | <b>केतु 3 वर्ष</b><br>16/06/2013<br>16/06/2016          | <b>गुरु 6 वर्ष</b><br>16/06/2016<br>17/06/2022          | <b>सूर्य 2 वर्ष</b><br>17/06/2022<br>16/06/2024         |
| राहु 17/06/2003<br>बुध 16/06/2005<br>शनि 17/06/2007     | मंगल 16/06/2009<br>केतु 17/06/2011<br>राहु 16/06/2013  | शनि 17/06/2014<br>राहु 17/06/2015<br>केतु 16/06/2016    | केतु 17/06/2018<br>गुरु 16/06/2020<br>सूर्य 17/06/2022  | सूर्य 15/02/2023<br>चंद्र 17/10/2023<br>मंगल 16/06/2024 |
| <b>चंद्र 1 वर्ष</b><br>16/06/2024<br>16/06/2025         | <b>शुक्र 3 वर्ष</b><br>16/06/2025<br>16/06/2028        | <b>मंगल 6 वर्ष</b><br>16/06/2028<br>17/06/2034          | <b>बुध 2 वर्ष</b><br>17/06/2034<br>16/06/2036           | <b>शनि 6 वर्ष</b><br>16/06/2036<br>17/06/2042           |
| गुरु 16/10/2024<br>सूर्य 15/02/2025<br>चंद्र 16/06/2025 | मंगल 17/06/2026<br>शुक्र 17/06/2027<br>बुध 16/06/2028  | मंगल 17/06/2030<br>शनि 16/06/2032<br>शुक्र 17/06/2034   | चंद्र 15/02/2035<br>मंगल 17/10/2035<br>गुरु 16/06/2036  | राहु 17/06/2038<br>बुध 16/06/2040<br>शनि 17/06/2042     |
| <b>राहु 6 वर्ष</b><br>17/06/2042<br>16/06/2048          | <b>केतु 3 वर्ष</b><br>16/06/2048<br>17/06/2051         | <b>गुरु 6 वर्ष</b><br>17/06/2051<br>16/06/2057          | <b>सूर्य 2 वर्ष</b><br>16/06/2057<br>17/06/2059         | <b>चंद्र 1 वर्ष</b><br>17/06/2059<br>16/06/2060         |
| मंगल 16/06/2044<br>केतु 17/06/2046<br>राहु 16/06/2048   | शनि 16/06/2049<br>राहु 17/06/2050<br>केतु 17/06/2051   | केतु 16/06/2053<br>गुरु 17/06/2055<br>सूर्य 16/06/2057  | सूर्य 15/02/2058<br>चंद्र 16/10/2058<br>मंगल 17/06/2059 | गुरु 17/10/2059<br>सूर्य 15/02/2060<br>चंद्र 16/06/2060 |
| <b>शुक्र 3 वर्ष</b><br>16/06/2060<br>17/06/2063         | <b>मंगल 6 वर्ष</b><br>17/06/2063<br>16/06/2069         | <b>बुध 2 वर्ष</b><br>16/06/2069<br>17/06/2071           | <b>शनि 6 वर्ष</b><br>17/06/2071<br>16/06/2077           | <b>राहु 6 वर्ष</b><br>16/06/2077<br>17/06/2083          |
| मंगल 16/06/2061<br>शुक्र 17/06/2062<br>बुध 17/06/2063   | मंगल 16/06/2065<br>शनि 17/06/2067<br>शुक्र 16/06/2069  | चंद्र 15/02/2070<br>मंगल 16/10/2070<br>गुरु 17/06/2071  | राहु 16/06/2073<br>बुध 17/06/2075<br>शनि 16/06/2077     | मंगल 17/06/2079<br>केतु 16/06/2081<br>राहु 17/06/2083   |
| <b>केतु 3 वर्ष</b><br>17/06/2083<br>17/06/2086          | <b>गुरु 6 वर्ष</b><br>17/06/2086<br>16/06/2092         | <b>सूर्य 2 वर्ष</b><br>16/06/2092<br>17/06/2094         | <b>चंद्र 1 वर्ष</b><br>17/06/2094<br>17/06/2095         | <b>शुक्र 3 वर्ष</b><br>17/06/2095<br>17/06/2098         |
| शनि 16/06/2084<br>राहु 16/06/2085<br>केतु 17/06/2086    | केतु 16/06/2088<br>गुरु 17/06/2090<br>सूर्य 16/06/2092 | सूर्य 15/02/2093<br>चंद्र 16/10/2093<br>मंगल 17/06/2094 | गुरु 16/10/2094<br>सूर्य 15/02/2095<br>चंद्र 17/06/2095 | मंगल 16/06/2096<br>शुक्र 16/06/2097<br>बुध 17/06/2098   |
| <b>मंगल 6 वर्ष</b><br>17/06/2098<br>17/06/2104          | <b>बुध 2 वर्ष</b><br>17/06/2104<br>18/06/2106          | <b>बुध 2 वर्ष</b><br>17/06/2104<br>18/06/2106           | <b>बुध 2 वर्ष</b><br>17/06/2104<br>18/06/2106           | <b>बुध 2 वर्ष</b><br>17/06/2104<br>18/06/2106           |
| मंगल 17/06/2100<br>शनि 18/06/2102<br>शुक्र 17/06/2104   | चंद्र 16/02/2105<br>मंगल 17/10/2105<br>गुरु 18/06/2106 | चंद्र 16/02/2105<br>मंगल 17/10/2105<br>गुरु 18/06/2106  | चंद्र 16/02/2105<br>मंगल 17/10/2105<br>गुरु 18/06/2106  | चंद्र 16/02/2105<br>मंगल 17/10/2105<br>गुरु 18/06/2106  |

नोट : 35 साला लाल किताब दशा लगभग तीन चक्र के लिए दी गई है।  
उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

पुण्य चक्र ज्योतिष केंद्र

Karnal  
9852

harish.rattan15@gmail.com

## टेवे की श्रेणी

### रतांध ग्रह/अंधा टेवा

लाल किताब के अनुसार रतांध ग्रह को नहोराता के ग्रह भी कहते हैं। ये ग्रह दिन में देखते हैं, परंतु यही ग्रह रात्रि में अंधे हो जाते हैं। ये ग्रह अर्द्ध-अंधे कहे जाते हैं अर्थात् चौथे खाने में सूर्य और सातवें खाने में शनि हो तो वह टेवा आधा अंधा टेवा कहलाएगा।

इस प्रकार का टेवा जातक के व्यावसायिक जीवन में, मन की शांति के लिए और गृहस्थ सुख के लिए काफी हद तक अशुभ असर पड़ता है। सातवें खाने में बैठा शनि बहुत शक्तिशाली हो जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सप्तम खाने के शनि को दिग्बल प्राप्त हो जाता है। इस भाव का शनि अपनी दसवीं संपूर्ण दृष्टि से सुख स्थान में स्थित सभी ग्रहों को प्रभावित करता है। शत्रु दृष्टि से सूर्य के शुभ फल अशुभता में परिणत हो जाएगा। चतुर्थ स्थान से सूर्य की सप्तम दृष्टि कर्म भाव पर पड़ कर कर्म फल को अशुभ कर देगा। सभी प्रकार की मन की शांति को पूर्ण रूपेण कम कर सभी प्रकार के सुखों को नष्ट कर देगा। कुंडली पर अशुभ प्रभाव देने वाला शनि और उसकी दृष्टि है। अतः सूर्य के उपाय की उपयोगिता नहीं। मात्र शनि की अशुभता नष्ट करने के लिए शनि का उपाय करना चाहिए।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी रतांध ग्रह से प्रभावित नहीं है।

### धर्मी टेवा

लाल किताब के अनुसार कुछ धर्मी टेवा होते हैं। धर्मी टेवा के अशुभ ग्रहों का प्रभाव बहुत हद तक कम हो जाता है। जिस टेवा में बृहस्पति के साथ शनि किसी भी घर में अर्थात् शुभ घर में स्थित हो तो ऐसा टेवा धर्मी टेवा हो जाता है। धर्मी टेवा वाला जातक मुश्किल या कष्ट के समय, जब उसकी सभी राहें अवरुद्ध हो जाती हैं उस समय ईश्वर अपने हाथों से उसकी सहायता करते हैं। शनि ग्रह मुश्किलों का एवं हमारे भाग्य का कारक भी लाल किताब के अनुसार होता है। टेवा में बृहस्पति के साथ अथवा बृहस्पति की राशि में शनि बैठ जाए तो शनि के स्वभाव में शुभता आ जाती है। बृहस्पति और शनि का संबंध बहुत से दोषों को दूर कर देता है। 6वें, 9वें, 11वें एवं 12वें घरों में शनि बृहस्पति का संयोग होना बड़ी समस्याओं का शमन एवं जीवन के उतार-चढ़ाव को नियंत्रित कर देता है। इसके प्रभाव से (कुंडली) टेवा की अशुभता समाप्त और सारी विपदाओं का अंत हो जाता है।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी धर्मी टेवा नहीं है।

### नाबालिग टेवा

लाल किताब के अनुसार कुछ हालातों में बारह साल की आयु तक कुछ नाबालिग

देवे होते हैं। उस दशा में बारह साल तक के बालक की कुंडली का प्रभाव नहीं उसके पिछले जन्म के भाग्य का असर ही प्रभावी रहता है। नाबालिग देवा उसको कहते हैं जबकि देवा 1, 4, 7 और 10 खाने अर्थात् केंद्र स्थान खाली हो अथवा सिर्फ पापी ग्रह शनि, राहु और केतु ही हो या अकेला बुध ही हो तो वह नाबालिग ग्रहों का देवा होगा।

उसकी किस्मत का हाल 12 साल तक शक्की होगा।

लाल किताब के अनुसार नाबालिग देवा वाले जातक पर बारह वर्षों तक प्रत्येक वर्ष एक-एक ग्रह का प्रभाव निम्नरूपेण पड़ा करता है। जीवन पर पड़ने वाले दुषित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

1. उम्र के पहले साल में सातवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
2. उम्र के दूसरे साल में चौथे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
3. उम्र के तीसरे साल में नौवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
4. उम्र के चौथे साल में दसवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
5. उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
6. उम्र के छठे साल में तीसरे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
7. उम्र के सातवें साल में दूसरे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
8. उम्र के आठवें साल में पांचवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
9. उम्र के नवमें साल में छठे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
10. उम्र के दसवें साल में बारहवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
11. उम्र के ग्यारहवें साल में पहले घर के ग्रह का असर पड़ता है।
12. उम्र के बारहवें साल में आठवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी नाबालिग ग्रहों का देवा नहीं है।

## लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उद्धृत किए जाते हैं।

### स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

### निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी स्वऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या अधिक से अधिक दस-दस रुपये जितने भी रुपये सभी दे सकें) इकट्ठा कर के धर्म स्थान पर सामूहिक यज्ञ करें।

### मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते हैं। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का

अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता है। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी मातृऋण से मुक्त है।

### पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नींव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

### कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्यमय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

### पितृ ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतूतों का कलंक लगना आदि घटनाएं होती हैं।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी पितृ ऋण से मुक्त है।

### स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात् दूसरा विवाह होना आदि।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्त्री ऋण से मुक्त है।

### निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिद्धियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

### निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

### आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-छीनी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालों की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

### ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

## लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।
2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।
3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।
4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।
5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।
6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर दें।
7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।
8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।
9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें।
10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये।
11. बुजुर्गों के रीति-रिवाजों को न तोड़ें और संस्कार पूरे करें।